शैलीगत संसक्ति

डा. मीनाक्षी व्यास
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
मुक्त शिक्षा विद्यालय/परिसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

शैली वैज्ञानिक अध्ययन साहित्य की आलोचना को वैज्ञानिक तथा उपयोगी स्तर प्रदान करता है। गद्य अथवा पद्य लेख की भाषा में प्रवाहमय स्वाभाविकता के लिये संसक्ति को शैलीवैज्ञानिक आलोचना में आवश्यक माना जाता है। वाक्यों की परस्पर विचारगत और तार्किक संबद्धता को संसक्ति कहते हैं। किसी काव्य अथवा गद्य-कथा, लेख निबंध को साहित्यिक पाठ की श्रेणी में रखा जाए अथवा नहीं यह संसक्ति पर निर्भर करता है। यदि किसी गद्य के वाक्य बाह्य अथवा आंतरिक स्तर पर विच्छिन्न दिखाई देते हैं तो उसे पाठ की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इस दृष्टि से किसी लेख की भाषा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि उसका केंद्रीय कथ्य इसी संसक्ति से संप्रेषित होता है संसक्ति को पाठ की ऐसी मुख्य विशेषता माना जा सकता है जो पाठ को एक व्यवस्थित रूप देता है। पाठ में एक अथवा अधिक विचार, स्थितियों के रूप में होते हैं, जो परस्पर कार्य-कारण रूप से संबंद्ध होते हैं। बाह्य भाषिक स्तर पर संसक्ति वाक्य में प्रयुक्त पद, पदबंध, उपवाक्य की अन्विति के रूप में होती है। वाक्य से जुड़े वे तत्त्व संरचक कहलाते हैं जिनसे

स्पष्ट होता है कि वाक्य अथवा उपवाक्य किस प्रकार जुड़े हुए हैं- समुच्चय-बोधकों के द्वारा, सर्वनामों के द्वारा, पुनरावृत्ति के द्वारा, अथवा किसी अन्य प्रकार से-इन सबकी तार्किकता का विवेचन संसक्ति के अंतर्गत किया जाता है।

पाठ में भाषा के धरातल पर वाक्य, उपवाक्य, पदबंध होते हैं, जिनमें एकाधिक कथ्य हो सकते हैं, जो परस्पर निबद्ध होकर संसक्त होते है। हर भाषा के वाक्यों में उपवाक्यों, पदबंधों के प्रयोग के अलग-अलग नियम होते हैं। किसी पाठ के वाक्यों में एक से अधिक उपवाक्य अथवा पदबंध भी आ सकते हैं जिनके संरचकों के तार्किक अर्थ में संसक्ति को खोजा जाता है। संसक्ति पाठ का आधार है। पाठ का एक संरचक अपने साथ वाले संरचक के अर्थ को संप्रेषित करने में साधक बनता है। ये भाषा तत्व साधारण भाषा को भी काव्य-भाषा का स्तर प्रदान कर सकते है। सामान्य तथा दैनिक भाषा से भी काव्य-भाषा निर्मित हो सकती है। सामान्य भाषा में काव्यभाषा की व्यंजना तथा तार्किक संप्रेषणीयता का होना उसकी संसक्ति पर निर्भर करता है। डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार - "वस्तुतः कवि जितना सामान्य भाषा के विस्तार से, सच्ची जिंदगी के सरोकारों से परिचित होगा उतना ही वह अपनी भाषा अर्थात् काव्य-भाषा को जिंदगी के पास लाते हुए सक्षम बना सकेगा।" (डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव - 'शैली और शैली

विज्ञान') सामान्य प्रचलित भाषा में आवर्तन, पर्याय, लय को संसक्त करके सामान्य भाषा को काव्यात्मक संदर्भों कों व्यक्त करने वाली जटिल काव्य-भाषा का स्तर दिया जा सकता है। इस प्रकार के संरचकीय तत्त्व पाठ के अर्थों को संप्रेषित करते हैं और व्याख्या को प्रेरित करने वाली विचारगत संसक्ति को स्पष्ट करते हैं।

वाक्य में प्रयुक्त होने वाले शब्द व्याख्या के लिए परस्पर निर्भर होते हैं लेकिन यह जरूरी नहीं कि सिर्फ एक-दूसरे के निकट रखे गए शब्द परस्पर संबंद्ध हो। जैसे - 'परिश्रमी छात्र और छात्राएं उत्तीर्ण हो गए।'

इस वाक्य में स्थान की दृष्टि से परिश्रमी विशेषण 'छात्राएं' की अपेक्षा 'छात्र' के अधिक निकट है, परंतु अर्थ की निकटता की दृष्टि से यह विशेषण वास्तव में छात्र और छात्रा से दोनों के लिये है।

संसक्ति पाठ की वाक्य-व्यवस्था को स्पष्ट करती है। इसमें यह भी देखा जाता है कि पाठ में निकटता से जुड़े संरचक कैसे बने हैं और उनको किस प्रकार प्रयुक्त किया गया है। जैसे-उद्देश्य और विधेय के क्रम से अथवा विशेषण-विशेष्य की कड़ी से। उपर्युक्त वाक्य में 'परिश्रमी' 'छात्र और छात्राएं' का विशेषण है। इस विशेषण पदबंध में 'छात्र और छात्राएं केंद्र हैं, जिनके विशेषण के रूप में 'परिश्रमी' के

अलावा किसी और विशेषण का प्रयोग भी हो सकता है। इस प्रकार पाठ-व्यवस्था में पदबंध, उपवाक्य और इनमें प्रयुक्त होने वाले तत्त्वों में संसक्ति जरूरी है।

संसक्ति के निर्धारक तत्त्वों में आवर्तन भी प्रमुख तत्त्व है। पुनरावर्तन अथवा आवर्तन भाषा की सभी इकाइयों जैसे-ध्वनि तथा वाक्य के स्तर पर संभव है। पुनरावर्तन से अभिप्राय हैं-'पाठ' में आए भाषिक तत्त्वों को यथावत् पुनः प्रयुक्त करना। पाठ में किसी पद विशेष पर बल देने के अलावा आश्चर्य की स्थिति में भी वक्ता अथवा प्रयोक्ता के द्वारा पुनरावर्तित इकाइयों का प्रयोग हो सकता है। पुनरावर्तन वक्ता के दृष्टिकोण अथवा किसी प्रसंग के व्यतिरेक अथवा अविश्वसनीयता के प्रति उसके आश्चर्य को व्यक्त करता है और साथ ही संसक्ति का माध्यम बनता है।

इसके अतिरिक्त योजकों के द्वारा पाठ के विभिन्न उपवाक्यों को परस्पर संसक्त किया जाता है। अतः योजकों के माध्यम से भी पाठ में संसक्ति का विधान होता है। 'किंतु', इसलिए, और, तथापि, आगे, इसी तरह, इसके अतिरिक्त, तभी, फिर भी, परिणामतः - विभिन्न प्रकार के योजक पाठ में संसक्ति लाने का कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ने संसक्ति के अन्य आयाम भी माने हैं। पाठ में विवरण, वार्तालाप कई अन्य ऐसे संदर्भ हैं, जिनसे पाठ अथवा वाक्य

संसक्त हो सकते हैं-इसे डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव ने संदर्भपरक संसक्ति का नाम दिया है। डा. श्रीवास्तव के अनुसार पाठ में आने वाले चरित्र तथा बिंब उपरी तौर पर अलग होकर भी, अपने प्रतीकात्मक अर्थ के आधार पर परस्पर संसक्त हो सकते हैं। किसी 'कथानक में ये प्रतीक व्यक्त (explicit) हो सकते हैं तो किसी में अव्यक्त (implicit) हो सकते हैं। इसे डॉ. श्रीवास्तव प्रतीकात्मक संसक्ति कहते हैं।

इसी प्रकार डॉ. श्रीवास्तव ने शाब्दिक संसक्ति का भी उल्लेख किया है। इनमें शाब्दिक पुनरावर्तन, पर्याय/विलोम को प्रयुक्त किया जाता है। इनके अतिरिक्त संरचनात्मक संसक्ति के संबंध में डॉ. श्रीवास्तव की मान्यता है-"जिस तरह से वाक्यों में संसक्ति का एक आधार उद्देश्य और विधेय होता है, उसी प्रकार पाठांश भी उद्देश्य और विधेय के रूप में एक-दूसरे से संसक्त हो सकते हैं। अंतर-वाक्य के संदर्भ में जिस प्रकार संयोजन की प्रकृति समानाधिकरणिक (co-ordinating) तथा आश्रित (subordinating) होती है उसी प्रकार पाठांश भी आश्रित रूप में संसक्त हो सकते हैं।" (डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव - अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान)

'पाठ' में निहित संसक्ति को एक-दो वाक्यों के उदाहरण से भी स्पष्ट किया जा सकता है और पूरे लेख के माध्यम से भी। विशेषरूप से

संदर्भपरक संसक्ति तथा प्रतीकात्मक संसक्ति को एक पूरे पाठ के माध्यम से अधिक स्पष्ट रूप में व्यक्त किया जाता है। इस दृष्टि से पाठ एक-दो वाक्यों का नहीं होता बल्कि ऐसे कई वाक्यों की व्यवस्थित इकाई के रूप में होता है, जिसके सभी वाक्य किसी विशिष्ट तात्पर्य अथवा उद्देश्य को संप्रेषित करते हैं। यह तात्पर्य अथवा उद्देश्य पाठ के वाक्यों में संसक्ति का आधार बनाता है। सामान्यतः संकेतार्थक तथा शाब्दिक संसक्ति लेख को 'पाठ' में बदल देती है। अतः पाठक द्वारा पाठ के अर्थ के आस्वादन में संसक्ति प्रमुख उपादान है।

संदर्भ ग्रंथ

- शैली और शैलीविज्ञान - डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव
- अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान - डॉ. रवींद्रनाथ श्रीवास्तव